साहित्य के मठाधीश

आज बौद्धिकता का सबसे बड़ा पैमाना हे असंतुष्ट रहना । मैं असंतुष्ट हूँ । मुझको हर जगह बुराई दिखती है । हर जगह भारी कमी है । और अगर सौभाग्य से कुछ कमियों पर सकारात्मक अधूरे तर्क दे दिये जायें तब तो गुरू मजे हैं । बड़े बुद्धिजीवियों में फिर अपनी गिनती शुरू हो जाती है । बड़े साहित्यकार, मर्मज्ञ, मृत साबर से मोती लिकाल लाने वाले गोताखोर, समाज की नब्जा पर पकड़ रखने वाले, आधुनिक युग के ऋषी । मित्रों, यह बड़ी अच्छी अवस्था है । ऐसा साधक सेल्फ मेड आभा मंडल लिये घूमता है चाहे सामने वाले को उनके दिव्य श्रीमुख से निकलती किरणों का पता न चले । अपने ज्ञान के सागर में डुबकियाँ लगाते, आत्ममुग्ध, जगत मिथ्या है और उसमें रहने वाले सभी प्राणी चिरकुट हैं, समस्त ब्रह्मांड में अगर कहीं पर प्रकाश है तो वह उनकी कुंए जैसी खोपड़ी में है । किंतु हाय ! यह जगत मुझसे प्रकाश क्यों नहीं ले रहा है । अभागे हैं सभी । चिरकुट कहीं के ।

यहां तक तो सब ठीक चल रहा हे । उपरोक्त अवस्था हंसों की होती है । अब परमहंस पद की चढ़ाई के लिये क्या जरूरी है वह भी बताता हूँ । (माफ कीजियेगा यहाँ हंस, परमहंस शब्द का वह मतलब नहीं है जो कि आमतौर पर संतों के लिये प्रयुक्त होता है ।) आधुनिक काल के चार्वाक वही ऋषी जिनका मैंने लेख के शुरू में उल्लेख किया है हंस पद की प्राप्ति के पश्चात भी जब जगत उनके काँव काँव पर ध्यान नहीं देता है तब वह परमहंस पद की ओर छलांग लगाता है ।

परमहंस पद के लिये घोर रूप से असंतुष्ट होना पड़ता है । यहाँ तक की

साधक को अपनी संस्कृति, अपने गौरवशाली इतिहास, विश्व को प्रकाशित करने वाले दर्शन तक पर मूतने का जोखिम उठाना पड़ता है । वह उठाता भी है क्योंकि यह लहकटों से भरा जगत उसकी काँव काँव को नकार चुका है । वह सारे इतिहास को प्रपंच, मिथ्या और मिथक कह कर कूड़े के डिब्बे में डाल देता है । अफसोस कि यह जगत ही उसको एक विशाल कूड़ेदान के रूप मे प्रमाणित कर देता है । क्या करे बेचारा साधक । इस परेशानी में जब कि उसका पूरा जीवन व्यतीत हो गया टर्राने में तब वह कुछ ऐसे स्टंट मारना चाहता है कि भाई न अच्छों में तो बुरों में तो गिनों । कुख्याति ज्यादा तेजी से फैलती है । सो अंतिम तीर चलाया उन्होंने, जो कि कंबख्त उन्हीं की तरफ मुड़ गया । उनका ताजा, कड़ाही से निकला भाप छोड़ता स्टेटमेंट है "रावण की लंका में पहला आतंकवादी हनुमान था ।" "शिवाजी आतंकवादी गुरिल्ला नहीं थे तो क्या थे ।"

बधाई हो बजरंगबली । इंटरपोल आप की तलाश में है । आप विश्व के पहले और प्राचीनतम आतंकवादी घोषित किये जा चुके हैं । आई.एस.आई. आप से संपर्क कर चुकी होगी । और अब इस पुरानी गदा से काम नहीं चलेगा, एके-47 लेनी पड़ेगी । कमऑन, गेट अप प्रभू । मोतीचूर भूल जाओ अब । अबकी लंका दहन नहीं संसद दहन करना पड़ेगा ।

औरंगजेब के भतीजों को ही क्षत्रपति शिवाजी आतंकवादी लगेंगे । आप से ऐसी ही उम्मीद थी । खरे उतरे हैं आप । हनुमान और शिवाजी आतंकवादी हैं तो लश्करे ताईबा, हिजबुल वाले स्वतंत्रता सैनानी होंगे । आतंकवाद की नई परिभाषा रची है साहब ने । इन महान प्रगतिशील लेखक को पूरी रामायण ही ढ़कोसला लगती है । जब राम ही नहीं रहेंगे तो रामजन्म भूमि पर भी कोई विवाद नहीं रहेगा । बाबर के पुरखे हैं साहब । इनको राम काल्पनिक लगते हैं पर शंबूक वध वास्तविक लगता है । चित भी मेरी पट भी मेरी और अंटा मेरे बाप का ।

मैं खुद प्रगतिशील सोच का समर्थक हूँ । क्योंकि अगर विश्व चलायमान न रहा, स्थिर हो जाये, तब फिर सृष्टि का विनाश निश्चित है । इतिहास चाहे

कितना ही स्वर्णिम क्यों न हो पर उसको जिया नहीं जा सकता है । इतिहास से सिर्फ सीख ली जाती है ताकि उसके काले अध्यायों का दुहराव न होने पाये । हजारों साल पहले के नियम कानून आज की व्यवस्था में नहीं चल सकते हैं । कम से कम भारत की शिक्षित जनता तो नहीं चलने देगी । फिर आज हमारा सबसे बड़ा नियम संविधान है । पूरा भारत संविधान के आधार पर चलाया जाता है मनुस्मृति, वेद, रामायण, कुरान शरीफ, बाईबल या गुरूग्रंथ साहेब के आधार पर नहीं । पर इससे इन धर्म ग्रंथों की महत्ता कम नहीं हो जाती है । हमारे मूल में तो यही है । हर चढ़ती हुयी सभ्यता अपनी ऊँचाई पर पहुँचने के बाद नीचे लुढ़कने लगती है । उसके समाज में कोई न कोई विकार आ ही जाता है । अहंकार तो सबसे पहले । महिलाओं को जो स्वतंत्रता ऋगवैदिक काल और उत्तर वैदिक काल में प्राप्त थी वह बाद में कम होने लगी । निर्मल, शांत ज्ञान के सरोवर में ब्रह्मणों ने शोषण का जहर मिला दिया । उन्होंने बाद में वह साहित्य रचना शुरू किया जिससे धर्म के नाम पर डरा धमका कर लूट की जा सके । महिलाओं की स्थिति इस्लाम ने और बदत्तर की । वह सिर्फ भोग्या रह गई । पाकिस्तान, बंग्लादेश, अफगानिस्तान (तालिबान शासित) सबूत है । वहाँ महिलाओं को कितने अधिकार प्राप्त हैं दुनिया जानती है । हिंदुओं ने भी कम पाप नहीं किये हैं पर वैदिक काल में न तो सती प्रथा थी और नहीं देवदासी प्रथा । काला अतीत । हर सभ्यता में कुछ न कुछ धब्बे जरूर मिल जायेंगे । समुद्र की सतह पर कुछ गंदगी जमा हो जाये तो पूरा समुद्र गंदा नहीं हो जाता है । उस समुद्र में ढ़ेरों रत्न भी छिपे हुये हैं । हमारा काम रत्नों से है या गंदगी हो । सतह पर इकट्ठी मैल को देख कर रत्नों से भरा समुद्र तो नहीं ठुकराया जा सकता । अपने काम की चीज जहाँ से भी मिले ले लेनी चाहिये और कूड़ा फैंक देना चाहिये ।

मैं उनको कायर और भगोड़ा समझता हूँ जो अपने आलीशान घर में जाले और घूल देख कर यह कहते हुये भाग गये कि छिः कितना गंदा घर है हमारा । हम इसमें नहीं रहेंगे । पर हुजूर इस घर की सफाई का जिम्मा भी तो हमारा ही है । बड़ी अच्छी बात है कि आपको दूसरों से ज्यादा गंदगी दिखाई देती है । तब तो आपका ही सर्वप्रथम कर्तव्य बनता है कि उठायें झाड़ू और

सारे जाले निकाल बाहर करें । ऐसा करने पर दुनिया आपको राजा राम मोहन राय की सूची में रखती पर आप तो दीवार का पलस्तर उखड़ता देख कर घर को ही आग लगा देना चाहते हैं । घर तो नहीं जलेगा पर आप जरूर झुलस जायेंगे । किसी भी समस्या का विश्लेषण निष्पक्ष हो कर करना चाहिये । सिर्फ विरोध के ही खूँटे से अपने आप को नहीं बांध लेना चाहिये ।

नकारात्मक सोच सबसे पहले अपना ही बेड़ा गर्क करती है । मित्रों, आप सोचोगे कि मैंने अब तक उस महापुरूष का नाम क्यों नहीं लिया । हांलाकि समझदार को इशारा ही काफी है और जानने वाले जान चुके होंगे कि मेरा इशारा किस भद्र पुरूष की तरफ है । ऐसे व्यक्तियों की सिर्फ एक दवा है उनको महत्व ही न दिया जाये इसलिये उनका विज्ञापन करना मैं उचित नहीं समझता हूँ । जबकि पूरा का पूरा लेख ही हुजूर को विज्ञापित कर रहा है ।